Date - 06/02/2025
Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह
मनोविज्ञान विभाग
महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester
Paper - CC - 7
Psychopathology

Topic :-

Clinical Case Study Methods in ppsychopathology

शोध विधियां

(Research Methods)

जैसा कि हम सभी जानते है, मनोविकृति विज्ञान में सामान्य व्यवहारों का वर्गीकरण, लक्ष्य, कारण रोक थाम, उपचार आदि से सम्बद्ध तथ्यों का अध्ययन किया जाता है। परंतु यह अध्ययन तभी सार्थक हो पाता है जब अध्ययन विधि सिर्फ वर्णनात्मक (descriptive) न होकर व्यवहारों के कारण आधृत सम्बंध (Cause base relationship) की व्याख्या करता है। जैसे असमान्य मनोविज्ञान में विशेष मानसिक विकृति (Mental Disorders) से सम्बंधित बहुत सारे लक्षणों (Symptoms) का वर्णन उपलब्ध है। इन लक्षणों को व्यक्ति की अन्य विशेषताओं जैसे लिंग (Sex) या सामाजिक वर्ग (Social class) से जोड़ा जा सकता है। जैसे, अवधान हास विकृति (Attention deficit disorder) लड़कों में लड़कियों की तुलना में अधिक सामान्य होता है। परंतु सचमुच में विज्ञानए सम्बंध के इस सरल वर्णन से कुछ और अधिक माँगता है। हम यहाँ यह समझना चाहेंगे कि क्यों अवधान हास विकृति लड़कों में लड़कियों की अपेक्षा अधिक सामान्य होता है ? इस प्रश्न और ऐसे ही प्रश्नों का उत्तर देने के लिए मनोविकृति विज्ञान में कुछ वैज्ञानिक शोध विधि का प्रतिपादन किया गया है जिसकी चर्चा हम इस इकाई में करेंगे। सचमुच में शोध विधि को परिभाषित करते हुए यह कहा जाता है कि यह ऐसी विधि होती है जिसका उपयोग कर मनोवैज्ञानिक अपने सम्बद्ध विषय-वस्तु का अध्ययन वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में करके किसी स्पष्ट निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।

नैदानिक केस अध्ययन विधि
(Clinical Case Study Method):

असामान्य मनोविज्ञान में नैदानिक कंस अध्ययन विधि को एक महत्वपूर्ण विधि के रूप में पहचान की गयी है। सचमुच में यह विधि भावमूलक शोध (Idrographic Research) पर आधृत है जिसमें मनोवैज्ञानिक व्यक्ति विशेष का अध्ययन करके किसी स्पष्ट एवं ठोस निष्कर्ष पर पहुँचता है न कि व्यक्तियों के समूह का अध्ययन करता है। असामानान्यता के कारणों से सम्बद्ध शोधों से यह साबित हो चुका है कि इसकी उत्पत्ति में परिवार की आर्थिक स्थिति, समाज, परिवार की सांवेगिक स्थितियाँ, रोगी के जीवन की घटनाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः ऐसे में यह आवश्यक है कि रोगी के जन्म से लेकर असामान्यता उत्पन्न होने की अवस्था तक के काल के सभी पक्षों का विस्तृत अध्ययन किया जायें। और इस तरह के अध्ययन में संर्वोत्तम विधि जो उभर कर सामने आती है वह है नैदानिक केस अध्ययन विधि। इस विधि में किसी विशेष रोगी का गहराई से विवरण एवं विश्लेषण किया जाता है। कारसन एवं बुचर (Carson & Butcher, (1992) ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि केस अध्ययन विधि किसी एक व्यक्ति या परिवार की गहराई से किया गया अवलोकन है जिसके आँकड़े के कई स्रांत जिसमें साक्षात्कार तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी सम्मिलित होता है, होते है।" सारासन तथा सारासन (Sarason & Sarason, 1996) के अनुसार," केस अध्ययन में एक ही रोगी के व्यवहार का विस्तृत अध्ययन किया जाता है।" स्पष्ट हुआ कि केस अध्ययन विधि में रोगियों के समूह का नहीं बल्कि किसी विशेष रोगी का ही गहन रूप से अध्ययन किया जाता है। इस विधि में रोगी के व्यक्तित्व की संरचना, गतिकी, उसकी कमजोरियाँ एवं प्रबलता, विकासात्मक पूर्ववृत्तियाँ तथा रोगी के भविष्य के बारे में निर्णयों आदि को शामिल किया जाता है। स्पष्ट है कि इस विधि में चिकित्सक रोगी के बारे में एक विस्तृत इतिहास तैयार करता है तथा उसका विश्लेषण करता है। कोरचिन (Korchin, 1986) के अनुसार एक परिपक्व एवं पूर्ण केस अध्ययन विधि उसे कहा जाता है जिसमें रोगी के व्यक्तित्व की संरचना एवं गतिकी की व्याख्या, प्रेरणात्मक, संरचनात्मक, विकासात्मक अनुकूलन पारिस्थितिको (Ecoogical) तथा जैविक दृष्टिकोणों से करता है। कई विशेषज्ञों जिनमें बेलर (Beller, 1962), हुबर (Huber, 1961) तथा मेनिगर, मेनैन तथा पुएसर (Menninger, Mayanan & Pruysar, 1962) का नाम मुख्य रूप से आता है, ने मिलकर केस अध्ययन का एक सामान्य प्रारूप भी तैयार किया है जिनमें अन्य बातों के अलावा निम्न बातें प्रमुख है।

(a) परिचय-सम्बंधी सूचनाएँ (Identifying information)-इसमें रोगी का नाम, उम्र, यौन, पता धर्म, पेशा आदि से सम्बद्ध सूचनाएँ रहती है।

(b) समस्या (Problem)

(c) चिकित्सक के पास आने का कारण (Reason for referral)

(d) परिवार का इतिहास (Family History)

(e) स्वास्थ्य एवं मेडिकल इतिहास (Health and Medical history)

(f) स्कूल एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि (School and Educational background)

(g) व्यक्तिगत एवं सामाजिक अभिभोजन (Personal and Social adjustment)

(h) कार्य एवं व्यवसायिक रिकार्ड (Work and Occupational record)

(i) वैवाहिक इतिहास एवं सामयोजन (Marital history and adjustment)

(j) व्यक्तित्व वर्णन (Personality description)

(k) सिफारिशें एवं पूर्वानुमान (Recommendations and Predictions)

उपरोक्त प्रारूप पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि केस अध्ययन विधि में रोगी कै भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीनों पहलुओं का समावेश किया जाता है जिसमें भूत पर सबसे अधिक बल डाला जाता है। असामान्य तथा नैदानिक मनोविज्ञान में कुछ अध्ययन काफी चर्चित हैं जिनमें फ्रायड का लिटल हंस (Little Hans. 1902. 1962), अन्ना ओ फ्रायड (Anna O Freud, 1895 / 1962) तथा रीट मैन (Rot man, 1909/1955), स्क्रोवर (Schrieber, 1974) का सिविल (Sybil), थिगपेन तथा कलेकली (Thingpen & Cleckley, 1967) का 'दी थ्री फेसेज ऑफ इभ' (The Three faces of Eve) अधिक लोकप्रिय है। केस अध्ययन विधि के कुछ लाभ(Advantages) तथा अलाभ (Disadvantages) है, इसके कुछ प्रमुख लाभ निम्न हैं।

(1) इस विधि के द्वारा व्यक्तित्व सम्बंधी समस्याओं का एक सम्पूर्ण तस्वीर मिलता है। परिणामतः इससे प्राप्त तथ्य पर आधारित नैदानिक मूल्यांकन काफी विश्वसनीय होती है।

(ii) केस अध्ययन विधि से मनोवैज्ञानिकों को वर्तमान समय में रोग के निदान (Diagonasis) तथा भविष्य में संभावित नैदानिक हस्तक्षेपों को विशिष्ट करने में काफी मदद मिलती है।

(iii) टाईलर (Tiler, 1991) के अनुसार केस अध्ययन श्रेणी के रोग के स्वरूप को सही-सही समझने का एक विशेष आइना (Mirror) होता है। इस समूह कि विशिष्टता अन्य विधियों में नहीं होती है।

(iv) कुछ खास-खास असामान्य व्यवहार की बारंबारता इतनी कम होती है कि उसका अध्ययन केवल कंस अध्ययन विधि द्वारा ही करना संभव है। जैसे बहुव्यक्तित्व (Multiple personality)।

(v) काजडिन (Kazdin, 1980) के अनुसार केस अध्ययन कभी-कभी एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करता है जिससे पूर्णतः स्थापित नियम की स्पष्ट अवहेलना होती है। परिणामतः एक नया एवं वैज्ञानिक विचारधारा का जन्म होता हैं।

(vi) इस प्रविधि का एक लाभ यह भी है कि इसके द्वारा कभी-कभी वैसे सिद्धान्त जो विवादास्पद होते है. को थोड़े समय के लिए अस्थायी समर्थन भी प्रदान किया जाता है। इस विधि द्वारा कभी-कभी सिद्धान्त का 'स्वभाविक जाँच (Natural test) भी हो जाता है।

इसके अलावा केस अध्ययन विधि की कुछ परिसीमाएँ भी हैं जिनमें से निम्नांकित प्रमुख हैं।

(i) इसकी एक प्रमुख परिसीमा यह है कि इसका स्वरूप जटिल प्रवृत्ति का होता है क्योंकि इसमें सम्मिलित किए गये प्रश्नों को ठीक ढंग से तैयार करने के लिए नैदानिक समझ, कौशल आदि की जरूरत पड़ती है। परिणामतः इसका उपयोग एक प्रशिक्षित एवं कुशल मनोविज्ञानी तक सीमित है।

(ii) इस विधि में प्रर्याप्त मात्रा में आत्मनिष्ठता पायी जाती है। परिणामतः इसकी विश्वसनीयता एवं वैधता संदेह के दायरे में होती है।

(iii) इसके द्वारा अतिगंभीर रूप से ग्रस्त रोगियों का अध्ययन करना संभव नहीं है।

(iv) इस विधि द्वारा कारण परिणाम सम्बंध (Cause-effect relationship) की स्थापना भी नहीं किया जा सकता क्योंकि इस प्रविधि द्वारा अनेक महत्वपूर्ण चरों को नियंत्रित करना संभव नहीं हो पाता।

(v) इस विधि से प्राप्त निष्कर्षों को समामान्यकृत करना भी सम्भव नहीं है।

उपरोक्त परिसीमाओं (Limitations) के बावजूद केस अध्ययन विधि का उपयोग असामान्य मनोविज्ञान ने काफी अधिक किया जाता है। कुछ केसेज में तो इसकी उपयोगिता असतुलनीय होती है।